ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

भारतीय उच्च शिक्षा का बदलता परिदृश्य

आशा सुनारीवाल
सहायक आचार्य,
इतिहास विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सूरतगढ़

सारांश

शिक्षा मानव समाज में लिंग जातीय, भाषायी, सांस्कृतिक, नस्लीय, आर्थिक, भौगोलिक भेदभाव रहित, सर्वांगीण विकास का आधारभूत तत्व है। शिक्षा प्रत्येक राष्ट्र के विकास की सूचक है। शिक्षा के माध्यम से समाज में नवीन ज्ञान का प्रसार एवं नवीन ज्ञान खोज को प्रोत्साहन मिलता है। शिक्षा के पदसोपानिक स्वरूप में उच्च शिक्षा उच्चतम स्थान पर स्थित है। उच्च शिक्षा समाज की बौद्धिकता का प्रतीक है। किसी राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक एवं औद्योगिक विकास के लिए प्रशिक्षित मानव शक्ति का विकास आवश्यक है। किन्तु वर्तमान में भारत उच्च शिक्षा प्रणाली अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है।

मुख्य शब्द : उच्च शिक्षा, सकल्पना एवं अर्थ

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा को परिभाषित करने के व्यापक प्रयासों के बावजूद कालिक, स्थानिक एवं अलग–अलग विद्वानों के मत में भिन्नता है। अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विद्यालय शिक्षा के पश्चात् उच्च शिक्षा के दो स्वरूप है–एक उच्च शिक्षा तथा दूसरा आगामी शिक्षा या तृतीयक शिक्षा। उच्च शिक्षा में डिप्लोमा व तीन से चार वर्षीय स्नातक उपाधि तथा तृतीयक शिक्षा में स्नातकोत्तर एवं शोध उपाधि (पी.एच.डी.) को शामिल किया जाता है। अर्थात विद्यालय के पश्चात् महाविद्यालय व विश्वविद्यालय शिक्षा को उच्च शिक्षा कहा जाता है।

शोध का उद्देश्य

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त विसगंतियों की और ध्यान लाना। शिक्षक–विद्यार्थी और संस्थागत वातावरण को मनोवृत्तियों को स्पष्ट करना जो सुखद वातावरण में बाधक है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में हमारी उन गौरवशाली परंपरा का ध्यान करना। ताकि हमारी वर्तमान उच्च शिक्षा अपने पुराने गौरव को प्राप्त कर विश्व में न केवल अपना उच्च स्थान बना पाये बल्कि ऐसे स्थान से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी न केवल अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने में सक्षम हो बल्कि देश, समाज और स्वयं के कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक हो।

समायाविधि

एक वर्ष।

शोध–प्रविधि

लघु सर्वेक्षण, द्वितीयक स्त्रोत, विभिन्न पत्र–पत्रिकाऍ,जर्नल्स।

भारत में उच्च शिक्षा इतिहास

प्राचीन काल–भारत में शिक्षा व शिक्षण की गौरवशाली परंपरा रही है। प्राचीन काल में भारत ज्ञान के क्षेत्र मे विश्व गुरु कहलाता था। प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारंभिक रूप हम ऋग्वेद में देखते हैं। इस समय शिक्षा में आचार्य का स्थान बड़ा गौरव का था। आचार्य धर्मबुद्धि से निःशुल्क शिक्षा देते थे। उनका बड़ा आदर और सम्मान होता था। आचार्य पारंगत विद्वान, सदाचारी होने के साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर अपना कार्य करते थे। वे इस बात की सुनिश्चितता करते थे, कि हमारे द्वारा शिक्षा प्राप्त ब्रह्मचारी ना केवल अपने पाठ्यक्रम में पारंगत होगा बल्कि चरित्रवान और अपनी आजीविका द्वारा अपना भरण पोषण करने में भी सक्षम होगा। आचार्य ब्रह्मचारी को अपने परिवार का अंग मानते थे और विद्यार्थी भी गुरु का सम्मान करते थे उनकी आज्ञा का पालन करते थे। विनय के नियमों का पालन नहीं करने वाले विद्यार्थी को आचार्य द्वारा दंड देने की परिपाटी भी थी। पाठयक्रम में वेदांगों के अतिरिक्त साहित्य, योग और दर्शन, ज्योतिषी, गणित, व्याकरण,न्याय और चिकित्सा शास्त्र इत्यादि विषयों का समावेश था। शिक्षा समग्रतामूलक थी। जिसमें शरीर, आत्मा, समाज सभी की और ध्यान दिया जा रहा था। शिक्षा अवगुणों को दूर कर गुणों का विकास करती थी। गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। गुरु शिष्य का अनुपात भी उचित

था। सह–शिक्षा का प्रबंध था। स्त्रियॉ भी उच्च शिक्षा प्राप्त करती थी और साहित्य में अपना योगदान देती थी। प्राचीन काल में काशी, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, प्रयाग, अयोध्या आदि उच्च शिक्षा के केंद्र थे। बौद्ध व जैन काल में शिक्षा के स्वरूप में परिर्वतन नहीं आया था। हमारे शिक्षा केन्द्रों की विश्व में पहचान थी, विदेशों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। शिक्षा एकांगी न होकर सम्रगतापूर्ण थी। राजनैतिक हस्तक्षेप नहीं था और शिक्षा केन्द्रों के सामने धन की कोई कमी नहीं थी।

मध्यकाल

मध्य काल में भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना के साथ शिक्षाविदों, धार्मिक व्यक्तियों, चिन्तकों व विचारकों का ध्यान शिक्षा की ओर गया। क्योंकि बिना अरबी भाषा के ज्ञान को प्राप्त किए आम मुसलमान न तो कुरान को पढ़ सकता था, न शासन के नियमों को समझ सकता था। और न मोहम्मद साहब द्वारा दिखाए गये मार्ग पर विधिवत चल सकता था। उसके जीवन में शिक्षा का बड़ा महत्व था। इस काल में इस्लामी शिक्षा का सर्वांगीण विकास हुआ। इस शिक्षा का उद्देश्य मुसलमानों में ज्ञान की वृद्धि करना, इस्लाम का प्रचार करना, इस्लामी सिद्धातों के अनुसार सदाचार की एक विशिष्ट प्रणाली का विकास करना था। मुस्लिम शासक विद्यार्थियों को प्रशासन में सिपहसलार, काजी, वजीर आदि पदों पर नियुक्त करते थे। फारसी जानने वाले को सरकारी सेवा में प्राथमिकता देते थे। बहुत से हिन्दुओं ने फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर ऊँचे पद प्राप्त किए। इस समय बड़ी संख्या में मुकतब, मदरसे, खानकाहों और पुस्तकालय की स्थापना होने लगी। इस समय मदरसे उच्च शिक्षा के केंद्र थे। उच्च शिक्षा ग्रहण करने वालों को मौलाना, मौलवी या फाजिल की पदवी दी जाती थी। राज्य द्वारा स्थापित मदरसों को राज्य की और से वित्तीय सहायता मिलती थी। देश के विभन्न भागों में मुसलमान, अमीरों व शासकों ने अनेक मदरसों की स्थापना की। सल्तनत काल की तरह मुगलकाल में शिक्षा में शासकों ने उच्च शिक्षा पर ध्यान दिया। साथ ही शिक्षा का उद्देश्य आत्मा की शुद्धि, सन्तुलित आचरण, उत्तम व्यवहार व मानव के सभी गुणों का विकास करना था। धर्म और धर्मनिरपेक्ष दोनों प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। सल्लतनत काल की भांति मुगलकाल में मुस्लिम समाज ने स्त्रियों की शिक्षा की और पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। मुस्लिम समाज में केवल शाही परिवार की स्त्रियों को छोड़कर अन्य वर्गों की बालिकाओं या स्त्रियों को शिक्षा देने का चलन नहीं था। सह–शिक्षा व स्त्री शिक्षा की स्थिति में गिरावट आई। इस काल में गुरु शिष्य संबंध सौहार्दपूर्ण थे। शिक्षकों का सम्मान था। शिक्षक सादगीपूर्ण, विद्वान, चरित्रवान थे और छात्रों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देते थे। गुरू आवश्यकता अनुसार दंड का प्रयोग भी करते थे। आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र। इस काल में हिंदू और बौद्ध शिक्षा केंद्रों को क्षति पहुँची। मुस्लिम शासकों के संरक्षण के अभाव में भी संस्कृत, काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन आदि ग्रंथों का पठन–पाठन जारी रहा। इस काल में शिक्षा व्यक्ति, समाज व काल की आवश्यकता को पूर्ण करती थी।

आधुनिक काल

आधुनिक काल में भारत में शिक्षा के स्वरूप अनेक परिर्वन आये। आधुनिक शिक्षा की नींव ईसाई मिशनरियों तथा व्यापारियों द्वारा भारत में रखी गई। उन्होंने मद्रास और बंगाल में सर्वप्रथम विद्यालयों की स्थापना की जहां ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय पाठयक्रम में शामिल थे। जब भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का राज्य स्थापित हो गया तब प्राच्य शिक्षा के साथ अंग्रेजी भाषा और साहित्य तथा यूरोपीय इतिहास विज्ञान आदि विषयों के पाठयक्रम में शामिल किया गया। इस समय अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीयों को सरकारी सेवा में अवसर प्राप्त हो रहे थे। अतः जनता का रुझान अंग्रेजी शिक्षा की ओर होने लगा साथ ही इस काल में मेडिकल, इंजीनियरिंग कॉलेजों की स्थापना हुई। स्त्री शिक्षा में सुधार लाने हेतु ज्योतिबा फुले ने 1848 में प्रथम स्कूल खोला उन्होंने शीघ्र ही बालिकाओं के लिए तीन और विद्यालय खोल दिए। 1857 में कलकत्ता, मुंबई और मद्रास विश्वविद्यालय स्थापित हुए। कोल्हापुर रियासत के राजा छत्रपति साहूजी महाराज ने दलित और पिछड़ी जाति के लोगों के लिए विद्यालय खोले और छात्रावास बनवाये। इससे उनमें शिक्षा का प्रचार हुआ और सामाजिक स्थिति बदलने लगी। स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ शैक्षिक आन्दोलन भी चला। दयानन्द सरस्वती, महर्षि अरविन्द, महात्मा गॉधी, मदन मोहन मालवीय ने शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने स्त्री–पुरूष, दलित, पिछड़ी जातियों की शिक्षा की व्यवस्था के लिए प्रयास करे।आधुनिक काल की शिक्षा व्यवस्था समय काल और परिस्थितियों की आवश्यकता पुरी करने में सक्षम रही।

भारत में उच्च शिक्षा का वर्तमान स्वरूप

स्वतंत्रता के बाद हमारी शिक्षा की प्रगति हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप हो इस हेतु संवैधानिक प्रावधान किये। भारत में केन्द्र व राज्यों में शक्तियों का विभाजन केन्द्रीय, राज्य व समवर्ती सूची में किया गया।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948) की सिफारिश के आधार पर शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल किया गया। आयोग ने उच्च शिक्षा में गुणवता लाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान की स्थापना की सिफारिश की, जिसके आधार पर यू.जी.सी. एक्ट, 1956 पास किया गया तथा यू.जी.सी. की स्थापना की गई। यू. जी.सी. देश भर के विश्वविद्यालय,महाविद्यालय को अनुदान देने तथा गुणवता निर्धारण–नियंत्रक का कार्य करती है।

हमारी शिक्षा की प्रगति हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप हो इस हेतु अनेक आयोग की स्थापना हुई जैसे राधाकृष्णन आयोग, माध्यमिक शिक्षा आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, कोठारी शिक्षा आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं नवीन शिक्षा नीति आदि के द्वारा भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समय समय पर सही दिशा देने के प्रयास किए गए फल स्वरुप शिक्षा संस्थाओं में वृद्धि हुई साथ ही विद्यार्थियों के नामांकन वृद्धि के प्रयास किए गए। वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में

सरकारी व निजी शिक्षण संस्थाओं में अत्यधिक वृद्वि हुई है। छात्र–छात्राओं की संख्या भी बढ़ी है। तथापि भारत के निजी तथा सरकारी शिक्षण संस्थानों से निकले 80 प्रतिशत से अधिक स्नातक वैश्विक मानदण्डों के अनुसार नौकरी के लायक नहीं है। टाईम्स हायर एजुकेशन और क्यूएस जैसी संस्थानों द्वारा विश्वविद्यालयों की विश्व रैंकिग में पहले 200 स्थान तक भारत का कोई भी विश्वविद्यालय नहीं है। यदि इस रिपोर्ट का पूर्णतया विश्वसनीय नहीं भी माना जाये तो भी भारतीय उच्च शिक्षा का क्षेत्र अनेक चुनौतियों से जुझ रहा है।

भारत में उच्च शिक्षा में चार आधार पर असमानता प्रतीत होती है–

1. लैंगिक असमानता।
2. भौगोलिक असमानता।
3. अल्पसंख्यक–बहुसंख्यक असमानता।
4. आर्थिक असमानता।

भारतीय संविधान के मूलाधिकार तथा नीति निर्देषक तत्वों में अनुच्छेद 14,15,39,51 समान अवसर प्रदान करने की अवसर प्रदान करती है। लेकिन स्वतंत्रता के पष्चात् उच्च शिक्षा में लैंगिक असमानता व्यापक रूप से सामने आयी है। इस असमानता को कम करने के लिए कई आयोग गठित किये गये। जैसे दुर्गाभाई देशमुख आयोग (1958–59), हंसा मेहता आयोग (1962–64), एन. पी. ई. (1966), पी. ओ.ए. (1992), व 2001 में महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार ने राष्ट्रीय नीति की घोषणा की।इन प्रयासों से जैविक असमानता कम करने में काफी सफलता प्राप्त की है लेकिन प्रयास अभी नाकाफी है। प्रत्येक संकाय में छात्राओं का नामांकन छात्रों की तुलना में काफी कम है। अल्पसंख्यक–बहुसंख्यक आधार पर उच्च शिक्षा में असमानता को कम करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 14,15,29,30, में प्रावधान किया गया है लेकिन धार्मिक एंव भाषायी आधार पर उच्च शिक्षा में अभी भी असमानता है। भौगोलिक आधार पर भारत में राज्यों में साक्षरता के स्तर में प्र्याप्त विभिन्नता है। आर्थिक आधार पर पिछड़े वर्ग,एस.सी. एवं एस. टी की साक्षरता का प्रतिशत भारत में कम है। 2015 में 46 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 369 राज्य विश्वविद्यालय, 205 निजी विश्वविद्यालय, 128 डीम्ड विश्वविद्यालय, 3 राष्ट्रीय महत्व के संस्थान एवं 40760 महाविद्यालय थे। जबकि 1947 में भारत में 20 विश्वविद्यालय तथा 496 महाविद्यालय अस्तित्व में थे। इस प्रकार हम देखते है, कि उच्च शिक्षण संस्थाओं की संख्या में अच्छी प्रगति हुई है। विधार्थियों का नामांन 2014–15 में 26585437 रहा था। इसमें 46.93 प्रतिशत छात्राएं का रहा था। सर्वाधिक नामांकन स्नातक स्तर पर 86.26 प्रतिशत रहा था। वही सबसे कम प्रतिशत शोध का रहा था।शोध में नवीनता और मौलिकता का स्तर पिछड़ा हुआ है, विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध छात्रों का षोशण किया जाता है जिससे वो शोध कार्य ढ़ग से नहीं कर पाते। यूजीसी द्वारा विश्वविद्यालयों की अनुशंसा पर अप्रूव की गई 5699 जर्नल में 88 फीसदी जर्नल को स्तरहीन बताया गया है। (राजस्थान पत्रिका दिनांक 26–3–18)

2014–15 में भारत में 1201350 का उच्च शिक्षा में शैक्षणिक स्टॉफ था। जिसमें 70 प्रतिशत लेक्चरर/ असि. प्रोफेसर, 14.01 प्रतिशत असो. प्रोफेसर/रीडर है,9. 22 प्रतिशत प्रोफेसर तथा 2.73 प्रतिशत सीनियर स्केल लेक्चरर थे। यद्पि प्रति वर्ष छात्र–शिक्षक अनुपात को पूरा करने का प्रयास सरकार द्वारा किया जाता हैं तथापि छात्र–शिक्षक अनुपात गड़बड़ाया हुआ है। कई कॉलेजों में कई विभाग ऐसे है जहॉ एक भी शिक्षक नहीं है। जबकि ह्वेनसांग के समय (7 वीं सदी में) नालन्दा में 10000 विद्यार्थियों पर 1510 शिक्षक थे। दूसरा पुस्तकालय व पुस्तकों की (संख्या लगभग 3 लाख) स्थिति बेहतर थी और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस विश्वविद्यालय को स्वायत्तता थी आजीविका के लिए निर्भर नहीं रहना पड़ता था। कुछ गांव दिये गये थे जिनसे प्राप्त आय से इसका विकास किया जाता था, जबकि वर्तमान में केन्द्रिय विश्वविद्यालयों को छोड़कर विश्वविद्यालय व महाविद्यालय स्तर पर शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात काफी चिंताजनक है। भारत के अधिकांश कॉलेजो व विश्वविद्यालयों में अनुसंधान हेतु सुविधाओं की कमी है।, पुस्तकालयों का अभाव है जबकि पुस्तकालय किसी भी शिक्षण संस्थान का ह्रदय होता है। इसलिए पुस्तकालयों की व्यवस्था की जानी चाहिए तथा प्रयोगशालाओं को आधुनिक रूप दिया जाना चाहिए। आज विश्वविद्यालयों में कुलपति व शिक्षक नियुक्ति में राजनीतिक हस्तक्षेप सामने आने लगा है, स्वायत्तता खतरे में पड़ती नजर आ रही है। उच्च शिक्षा के विकास में बाधक तत्वों में बाजारीकरण व निजीकरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। बाजारवाद हर वस्तु के आर्थिक महत्व को देखता है। जबकि शिक्षा सामाजिक–नैतिक महत्व का विषय है। संयुक्त राष्ट्र की ह्यूमन राइट काउन्सलिंग की रिपोर्ट के अनुसार–परिषद् ने दक्षिण अफ्रीका के अपने अध्ययन में बताया है कि वैश्विक स्तर पर विश्वविद्यालयों की छवि खत्म होने के कगार पर है। ऐसा कमोडिफिकेशन (शिक्षा को उत्पाद का विषय मान लेने) की वजह से हो रहा है। रोजगारन्मुखी शिक्षा का अभाव भी वर्तमान भारतीय उच्च शिक्षा के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौती है। मानविकीक विषयों के स्नातक व स्नातकोतर छात्रों के समक्ष आज भी बेरोजगारी मुँह खोले खड़ी है। वैश्वीकरण, बहुराष्ट्रीय कम्पनीयों के आगमन, अर्थव्यवस्था का वैश्विक उन्मुख दृष्टिकोण के कारण कौशल विकास, तकनीकि, वैज्ञानिक विश्व में रोजगार बढ़ रहे है परन्तु इन सब के अनुकूल भारतीय उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम एवं स्वरूप नहीं ढल पाया है। हाल में ही मैसकॉम और मैकिन्से के शोध के अनुसार मानविकी में 10 में से एक और इंजीनियरिंग में डिग्री ले चुके चार में से एक भारतीय छात्र ही नौकरी पाने के योग्य हैं। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद का शोध बताता है कि भारत के 90 फीसदी कॉलेजों और 70 प्रतिशत विश्वविद्यालयों का स्तर बहुत कमजोर है। यहां तक की आईआईटी जैसे संस्थान भी वैश्विक स्तर पर जगह नहीं बना पाते। भारत के पास दुनिया की सबसे बड़ी तकनीकि एवं वैज्ञानिक मानव शक्ति का जखिरा है इस दावे की यही हवा निकल जाती है। इसलिए शिक्षा में नवाचार लाना तथा पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुखी बनाना अतिआवश्यक है। संख्या की दृष्टि

से भारत की उच्च शिक्षा व्यवस्था अमेरिका व चीन के बाद तीसरे स्थान पर है। किन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से दुनिया के शीर्ष दौ सौ विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी विश्वविद्यालय नहीं है। भारत के पंजाब विश्वविद्यालय का स्थान 226 वां है। उच्च शिक्षा की सर्वप्रमुख चुनौती है। सभी प्रदेशों में एक समान शिक्षा नीति का न होना। बाजार–निर्देशित–नियंत्रित–केन्द्रित व्यवस्था ने शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमें स्व से अलग कर रखा है, खुद से संवाद की सम्भावना का लोप हो गया हैं।

उच्च शिक्षा में असुरक्षा, भय, हिंसा, व अनास्था का माहौल बना रहता है। विद्यार्थियों और शिक्षक दोनों ही इस वातावरण के शिकार है। शिक्षक, वेतन, स्थान्नातरण, शिक्षको के आपसी मतभेदों, और आपसी गुटबाजी से सशंकित है। वही विद्यार्थियों में गुरू–शिष्य की परम्परा में अनास्था का माहौल उत्पन्न हुआ है। छात्रों में अनुशासनहीनता बढ़ी है। आज न तो चाणक्य व द्रोणाचार्य जैसे गुरू है और न ही चन्द्रगुप्त और एकलव्य जैसे शिष्य। वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली परम्परागत मूल्यांकन पद्धति के चलते भी गुणात्मक दृष्टि से पिछड़ी हुई है। विद्यार्थी पूरे साल तैयारी न करके फाईनल परीक्षा में कुछ समय ही पढ़कर परीक्षा पास कर लेते है। जिससे शिक्षा के वांछित उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती है।

निष्कर्ष

उच्च शिक्षा ज्ञान की उच्चतम कसौटी होती है, बल्कि किसी देश की अस्मिता की पहचान भी होती है। भारत में उच्च शिक्षा प्राचीन समय से विद्यमान रही है। ऐतिहासिक परिस्थितियों के चलते हमारी विकसित और जांची परखी उच्च शिक्षा की परम्परा कमजोर पड़ती गई और हम इनसे भौतिक और मानसिक रूप से दूर होते गए। 19 वीं सदीं के अंत में जिस उच्च शिक्षा की नई औपचारिक व्यवस्था आधुनिक विश्वविद्यालयों के रूप में हुई थी। वह अंग्रेजों की देन है जो थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ अभी भी चल रही है। 21 वीं सदी के दूसरे दशक में जब हम विचार करते है तो भारत में उच्च शिक्षा के उद्देश्यों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और व्यवस्थाओं में बढ़ी विविधता पाते है। जिसमें शिक्षा के निष्कर्षों को लेकर अस्पष्टता आ गई है। ज्ञानवर्धन के स्थान पर आर्थिक सरोकारों की निर्णायक प्रधानता के फलस्वरूप हम एक जटिल स्थिति में पहुँच रहे है।संख्यात्मक रूप में भारतीय उच्च शिक्षा विश्व में उच्च स्थान रखती है लेकिन गुणात्मक रूप में भारत का कोई भी उच्च शिक्षण संस्थान विश्व के प्रथम 200 उच्च शिक्षा संस्थानों में स्थान नहीं रखता है। यह भारतीय उच्च शिक्षा की निम्न गुणात्मकता को दर्शाता है। बढ़ती जनसंख्या एंव वैश्वीकरण के युग में उच्च शिक्षा में संख्यात्मक के साथ–साथ गुणात्मक अभिवृद्धि की महती आवश्यकता है।

संदर्भ

1. *महाजन, विद्याधर प्राचीन भारत का इतिहास, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि. नई दिल्ली।*
2. *ग्रोवर बी. एल., यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली।*
3. *प्रो. राधेश्याम, मध्यकालीन प्रशासन, समाज संस्कृति*
4. *जौहरी, बी.पी एंव पाठक पी.डी., भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
5. *रूहेला,सत्यपाल, भारतीय शिक्षा का समाज, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।*
6. *मानव संसाधन विकास मंत्रालय, अखिल भारतीय उच्चतर शिक्षा सर्वेक्षण, की वार्षिक रिपोर्ट–2013–14, 2014–15*
7. *अग्निहोत्री, डॉ. रवीन्द्र, (2010) आधुनिक भारतीय शिक्षाः की समस्याएँ, और समाधान, राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकदमी, जयपुर।*
8. *अग्रवाल, पवन (2006) Higher Education in india: The need for change.New Delhi,India:Indian Council for Rasearch on International Economic Relations*
9. *Sunita Gupta and Mukta Gupta,Higher Eduction Towadrds 21'st Century,Anmol Publiction Pvt,Ltd, New Delhi-110002*
10. *रूटेला. ए. (2002) एक्सट्रनल क्वालिटी इन इंडिया, हायर एजुकेशन केस स्टड़ी ऑफ एन.ए.ए.सी., पेरिस, आई.आई.ई.पी., यूनेस्को*
11. *www.wikipedia.org*
12. *यादव, डॉ. वीरेन्द्र सिंह (2011): भारत में शिक्षा के उभरते क्षितिज और गहराती चुनौतियां, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
13. *UGC and Higher education in India Annual report : 2013-14,2014-15*